सह-अस्तित्व : एक वैचारिकी

सप्रभिवादन डॉ० शशिकला जायसवाल जी
असिस्टेंट प्रोफेसर हिन्दी.

26.03.2019

विकास सिंह
संपादक
असिस्टेंट प्रोफेसर, प्राचीन इतिहास
राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय,
गाजीपुर

लोकनाथ पब्लिकेशन

प्रथम संस्करण : २०१९

ISBN 978-93-81123-92-8

© प्रकाशक

Email- prcbsbi@gmail.com

lnpvns@gmail.com

Web : www.philosophical researchcouncil.com

मुद्रक

फिलोसोफिकल रिसर्च कौंसिल

प्रकाशक

लोकनाथ पब्लिकेशन

लखनपुर भुल्लनपुर

वाराणसी २२११०८

पंचम पुष्प

स्व-अस्तित्व से सह-अस्तित्व तक : स्त्री

डॉ. शशिकला जायसवाल ♦

पीढ़ियों को बढ़ाने और बनाने में बराबर की हिस्सेदार 'स्त्री' ने मानव- सभ्यता के इतिहास में दोनो तरह से अपनी भरपूर भागीदारी दी है- वह शारीरिक दक्षता का क्षेत्र हो, चाहे मेधा का परिचय हो, चाहे अपाला घोषा से मीरा तक की यात्रा हो, या देवासुर संग्राम की कैकेयी से रजिया सुल्तान-लक्ष्मीबाई तक, इतिहास महिला शक्ति को चतुर्दिक स्वीकारता है। इतना ही नहीं महिलाओं की श्रमशक्ति का भी कोई सानी नहीं है, प्राचीन चित्रकलाओं का मूल्यांकन करें तो भी और भारत के सूती वस्त्र उद्योग पर दृष्टि डालें तो भी।

बीसवीं सदी के शोधवेत्ताओं का यह निष्कर्ष स्त्रियों के महत्व को स्थापित करता है- "स्त्रियों ने पशुवत मानव-जीवन को अपने हस्तक्षेप से काफी उपर उठा दिया, जंगलों पेड़ों और गुफाओं में रहने वाले और भोजन के लिए शिकार पर निर्भर मनुष्य जाति को स्त्रियों के हस्तक्षेप से सभ्यता प्राप्त हुई, इसमें प्राकृतिक संसाधनों के साथ अनन्त प्रयोग, बेइतंहा धैर्य, संतानों को बड़ा करने की खास जिम्मेदारी, खास तरह के स्वादों का आविष्कार, सौन्दर्य बोध का विकास, असाधारण शारीरिक दक्षता, और उच्च कोटि की रचनात्मक मेधा का इस्तेमाल शामिल था।"[१] इसमें कोई दो राय नहीं कि सदियों से जन्म ने के अधिकार से वंचित होती रही 'स्त्री' ने इंसान के रूप में, स्वयं को स्थापित ही नहीं किया बल्कि यह प्रमाणित किया कि 'वह है तो सब है वरना कुछ भी नहीं।' जहाँ तक भारतीय समाज में स्त्रियों की चर्चा का प्रश्न है, वह ऋग्वेद काल से

♦ विभागाध्यक्ष (हिन्दी) राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय ,गाजीपुर

१. समकालीन जनमत, वर्ष-२५ अंक-२ मई २००६

नेहवाल जैसी उद्यमियाँ है तो ममता वनर्जी, मायावती, महबूबा मुफ्ती, जयललिता, स्मृति इरानी, सुषमा स्वराज, सुमित्रा महाजन जैसी राजनीतिक हस्तियाँ है, जिनके बल पर हम आधी आबादी की ताकत और सकारात्मक सहकार को समझ सकते हैं।

संक्षेप में स्त्री अपनी पहचान बनाने में भले ही संघर्षरत रही हो, या यूं कहे कि उसके महत्व को भले ही स्वीकार न किया जाता रहा हो, लेकिन यह तो तय है कि सह-अस्तित्व के लिए उसके योगदान को अस्वीकार कर पाना असम्भव है। ब्रम्हाण्ड की सबसे अमूल्य वस्तु 'ममता' की थाती को सहेजे वह समर से समाज तक स्व-अस्तित्व के लिए संघर्ष करती रही है। देवासुर संग्राम से लेकर स्वतन्त्रता संग्राम तक नारी योगदान को कौन विस्मृत कर सकता है, अपाला, घोषा से लेकर आधुनिक नारी उद्यमियों तक की मेधा शक्ति से कौन परिचित नहीं है। राजनीति जैसे आधुनिक दुर्गम पथ की कुशल राही को, क्रीड़ा जगत की नामचीन हस्तियों को कौन भला दरकिनार कर सकता है। कुल मिलाकर नारी के स्व-अस्तित्व का संकट नहीं हैं। पंक्तियों में शामिल करने वालों के चतुराई की वह मोहताज नहीं है। नारी समाज ने सदैव 'स्व' का विसर्जन और त्याग को महत्व दिया है। बेटी , बहन, पत्नी और मां के रूप में उसने परिवार के हर संकटो और समस्याओं को सहा है। परिवार और पीढ़ियों के लिए हमने सदैव कंधे से कंधा मिलाकर आगे बढ़ाने की सोची और सृजनात्मकता हेतु अपने कष्ट के लिए उफ तक कभी नहीं की। आप लंका रचे चाहे महाभारत, अहम् आपका ही टकराता रहा है, हमने तो हर परिस्थितियों के साथ तादात्म्य स्थापित करने और सद्भाव से समाज के टकराहट का शमन करने की ओर ही कदम बढ़ाया है। आपका भरोसा 'निर्वासन' पर रहा पर हमारा तो सदैव ही समाज की तथा पीढ़ियों की मर्यादा को बचाने और बढ़ाने की ओर ही संलग्नता रही। प्राणियों में नारी के स्व-अस्तित्व से सह-अस्तित्व के योगदान को भू-मण्डल सदैव अन्तर्मन से स्वीकार करेगा। पुरुषसत्तात्मक समाज को अपनी सोच बदलनी ही पड़ेगी, अन्यथा वह दिन दूर नहीं जब वह अपनी सत्ता के मोह के साथ अलग-थलग पड़ा दिखलाई पड़ेगा।